B.S.N.V. P.G. College, Charbagh Lucknow

Department of History (MIH)

B. A. PART – III (HISTORY) Semester- V Session 2020-21 Paper-III A

Syllabus

(A) : Socio-Cultural and Economic History of India (1206 AD – 1739) AD

Lecture Part II

Dr. Nilima Gupta
Associate Professor

फतवाये जहांदारी

इस ग्रन्थ की रचना बरनी ने तारीखे फीरोजशाही लिखने के बाद किया है। मुस्लिम शरियत के अनुसार फ़तवा का अर्थ है- कोई सिद्धान्त जिस पर किसी तरह का विवाद हो, पर किसी मुफ्ती या विधिज्ञ का मत । जहांदरी का अर्थ है- संसार को नियंत्रण रखना।बरनी ने फतवा का प्रयोग घोषणा या उपदेश के सामान्य अर्थ में किया है।और जहांदारी का अर्थ राज्य व्यवस्था से है। बरनी लिखता है- प्राचीन लेखकों ने राज्य व्यवस्था से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थ लिखे हैं किन्तु बादशाहों,मंत्रियों , मलिकों ,तथा अमीरों के पथ प्रदर्शन के लिए मैंने जिस प्रकार राज्य व्यवस्था सम्बन्धित नियमों का उल्लेख इस ग्रन्थ में किया है उस प्रकार आज तक किसी लेखक ने नहीं किया।

फतवाये जहांदारी की हस्त लिखित एक प्रति लंदन के इंडिया आफिस के पुस्तकालय में है। इसमें 248 पन्ने है।

मध्यकालीन इतिहासकारों में जियाउद्दीन बरनी एक मात्र ऐसा इतिहासकार है जिसने राजव्यवस्था से सम्बन्धित लगभग सभी विषयों पर पारम्परिक सिद्धांतो के अतिरिक्त व्यतिगत विचारों का विस्तार से वर्णन किया है। उसने ग्रन्थ में सिद्धांतो की पुष्टि प्राचीन ईरान और इस्लामी इतिहास के उदाहरण दे कर की है। मो0हबीब के अनुसार फ़तावाये जहांदारी में दिल्ली के किसी सुल्तान का नाम का उल्लेख नहीं करता,यद्यपि पुस्तक के कई अंशों में वह(बरनी) उनको अपने मस्तिष्क में रखे हुए लगता है।

Dr. Nilima Gupta

बरनी महमूद गजनवी को योग्य, आदर्श मुसलमान मानता है। उसने प्रायः सभी उपदेशों या शिक्षाओं को सुल्तान महमूद द्वारा महमूद के पुत्रों को या इस्लाम के बादशाहों को संबोधित करते हुए दर्शाया है। फ़तवाहे जहांदारी को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- प्रथम सिद्धांत द्वितीय इतिहास के उदाहरण।

फतवाये जहांदारी में देश के आर्थिक स्थिति पर भी प्रकाश डाला गया है। इसके अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है मुस्लिमों का राज्य के उच्च पदों एवम् महत्वपूर्ण विभागों पर अधिकार था,परंतु राज्य की आर्थिक व्यवस्था हिन्दुओं के उच्च वर्गों के हाथ में थी।वे लोग सुल्तान को समय - समय में राज्य को ऋण प्रदान करते थे।इस वर्ग की व्यापार पर अच्छी पकड़ थी

बरनी इसी लिए बार – बार हिंदुओं को जड़ से नाश करने की राय जब – तब देता रहता है। बरनी ने समकालीन राजनीतिक संस्था, राजत्व ,राजस्व , सेना इत्यादि सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। इस ग्रन्थ से दिल्ली सल्तनत के सन्दर्भ में धर्म और राजनीतिक सम्बन्धों पर प्रकाश पड़ता है। इससे कुलीन वर्ग के मुसलमानों का और गैर मुस्लिम संप्रदायों के प्रति दृष्टिकोण का पता का चलता है। बरनी के अनुसार हिन्दू धर्म के अनुयायी के लिए इस्लाम धर्म एक ही शिक्षा देता है कि उनकी हत्या कर दी जाए या फिर उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए विवश किया जाय। इस ग्रन्थ से समकालीन राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक स्थिति का ज्ञान होता है।

<u>हसरतनामा</u>

यह पुस्तक अभी तक अप्राप्य है अमीर खुर्द ने अपने ग्रन्थ सियारुल औलिया तथा शेख़ अब्दुल मुहकदिस देहलवी ने अपनी पुस्तक – अखबारूतल अख्यार में कुछ विवरण दिए हैं। इसमें बरनी ने अपनी जीवनी तथा शेख़ निजामुद्दीन औलिया की संत गोष्ठी एवम् समकालीन लेखकों व कलाकारों का वर्णन किया है।

Lecture to be continue …

Dr. Nima Gupta